सक्सेस एंड एबिलिटी

Success & ABILITY

विकलांगों के प्रतिभा की दिशा में

जून 2018

डॉ. अलीम चंदानी

एक सफल सामाजिक उद्यमी, नेता और विश्वविद्यालय के प्रोफेसर, डॉ.अलीम चंदानी बधिर लोगों को व्यापार और पेशे में सफल होने के लिए उनका मदद करते हैं

अश्विन कार्तिक एस. एन.

सेरेब्रल पाल्सी क्वाड्रिप्लेजिया युक्त भारत के पहले इंजीनियर

इस अंक में

3

आवरण कथा

इस ऊर्जस्वी युवक को देश में बधिर लोगों के बीच उद्यमिता और शिक्षा में एक नए युग की शुरुआत करने को क्या उत्तेजित करता हैं?डॉ. अलीम चंदानी के साथ एक विशेष साक्षात्कार में उनका जवाब।

मार्ग में अग्रसर 9

अश्विन कार्तिक.... धैर्य, दृढ़ता, सशक्तिकरण, अविश्वसनीय भक्ति और असाधारण दोस्ती की कहानी।

14 **समाचार और टिप्पणियाँ**

सेवा कुत्ते, शानदार सशक्त अभियान, सड़क दुर्घटना ग्रस्त लोगों की मुआवजे में वृद्धि और सुलभ भारत अभियान पर ताज़ा विवरण।

समय प्रबंधन 18

मुंबई के प्रतिष्ठित डब्बावालों से दक्षता और समय प्रबंधन के रहस्य जानें।

21 **जीवन के कुछ पल**

ए.के.सिंह, महाप्रबंधक, कोल इंडिया अपने जीवन और करियर पथ के प्रमुख मोड़ साझा करते हैं।

विचारें 25

क्या आप केमरा के आदी हैं? तो यह लेख आपके लिए है ...

हम आपसे सुनना चाहते हैं

चाहे आप विकलांग व्यक्ति हों, या माता-पिता या मित्र या कोई भी जो परवाह करता हो, हम आपको और आपके विचारों को जानने के लिए तत्पर हैं। आप बस एक *क्लिक* की दूरी पर हैं!

संपादक जयश्री रवींद्रन

प्रबंध संपादक जानकी पिल्लई

उप संपादक हेमा विजय

सह संपादक सुचित्रा अय्यप्पा

क्रिएटिव डिज़ाइनर मेरी पर्लिन

हिंदी अनुवादन मालिनी. क

संवाददाता

अनंतनाग: जावेद अहमद तक +911936 211363

हैदराबाद साई प्रसाद विश्वनाथ 91810685503

भोपाल : अनिल मुद्गल+91755 2589168

भुवनेश्वरडॉ. श्रुति मोहपात्रा +91 6742313311

दुर्गापुरअग्शु जाजोडिया +919775876431

गुरुग्राम :सिद्धार्थ तनेजा +919654329466

पुणे : साज़ अगरवाल+919823144189 संदीप कनाबार +919790924905

बैंगलोर : गायत्री किरण +919844525045 अली ख्वाजा+9180 23330200

नई दिल्ली अभिलाशा ओझा +919810557946

यु.इस. ऐ डॉ. मदन वसिष्टा +1(443)764-9006

प्रकाशक : एबिलिटी फाउंडेशन संपादकीय कार्यालय : नया न. 23, 3rd क्रॉस स्ट्रीट, राधाकृष्णन नगर, तिरुवान्मयूर, चेन्नई , इंडिया फ़ोन/फैक्स : 91 44 2452 0016 / 2440 1303. इ- मेल: magazine@abilityfoundation.org. ऐबिलिटी फाउंडेशन की ओर से जयश्री रवींद्रन द्वारा प्रकाशित, 27, 4th मेइन रोड, गाँधी नगर, चेन्नई 600 020. फ़ोन: 91 44 2452 0016. वेब साइट: www.abilityfoundation.org

Rights and permissions: No part of this work may be reproduced or transmitted in any form or by any means, without the prior written permission of Ability Foundation. Ability Foundation reserves the right to make any changes or corrections without changing the meaning, to submitted articles, as it sees fit and in order to uphold the standard of the magazine. The views expressed are, however, solely those of the authors.

बड़ा सोचो!

डॉ. मदन वशिष्ट

नेतृत्वता, शिक्षा, व्यवसाय और काम-काज की दुनिया ... डॉ. अलीम चंदानी जीवन में सफल होने के लिए भारत में बधिर लोगों को सशक्त कर रहे हैं। डॉ. मदन वशिष्ट के साथ इस विशेष साक्षात्कार में वे अपनी कहानी साझा करते हैं।

एक सफल सामाजिक उद्यमी, नेता और विश्वविद्यालय के प्रोफेसर होने के बावजूद डॉ. अलीम चंदानी ने अपने पेशे को छोड़कर, भारत के बधिर लोगों को व्यापार और पेशे में सफल होने के लिए उनका मदद कर रहे हैं। मुझे कई वर्षों से डॉ चंदानी के साथ काम करने का अवसर मिला और मैंने उन्हें एक व्यक्ति और पेशेवर दोनों के रूप में विकसित होते हुए देखा। भारत में बधिर लोगों के बीच अपनी कार्य नैतिकता फैलाते देखकर मुझे बेहद खुशी हुयी।

मुंबई में पैदा हुए, डॉ चंदानी ने आठ साल की उम्र तक लंदन में बधिरों के लिए मिल हॉल ओरल स्कूल में पढ़ाई किया, इसके बाद संयुक्त राज्य अमेरिका के अन्य मुख्यधारा के स्कूलों में उन्होंने मध्य और उच्च विद्यालय शिक्षा प्राप्त किया। अपनी कॉलेज शिक्षा के लिए, उन्होंने रोचेस्टर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आर.आई.टी) चुना। न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय में बधिर पुनर्वास और उच्च शिक्षा में एम.ए करने के बाद विशेष शिक्षा प्रशासन में डॉक्टरेट की डिग्री के लिए डॉ. चंदानी वाशिंगटन डी.सी के गैलौडेट विश्वविद्यालय को गए।

डॉ. चंदानी सामाजिक उद्यमिता और नेतृत्वता प्रशिक्षण में बहत सक्रिय हैं। 2007 में आर.आई.टी में काम करते वक्त उन्होंने ग्लोबल रीच आउट (जी. आर.ओ) की स्थापना की और वे इसके मुख्य कार्यकारी अधिकारी बने रहे।

जी.आर.ओ के सहयोग से सेंटम में एक नेतृत्व और उद्यमी प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करने के लिए ,दो साल पहले भारत आने के पूर्व, डॉ. चंदानी गैलौडेट विश्वविद्यालय में पढ़ाते थे। वे सेंटम लर्निंग लिमिटेड, नई दिल्ली के एसोसिएट उपाध्यक्ष हैं। एक गत्यात्मक और बहत केंद्रित युवा व्यक्ति, डॉ चंदानी भारत में बधिर लोगों के शिक्षा,

GRO INITIATIVE

रोजगार, प्रशिक्षण और सशक्तिकरण में एक बड़ा प्रभाव डाल रहे हैं।

यहाँ ई-मेल के आदान-प्रदान के माध्यम से उनके साक्षात्कार के अंश दिए गए हैं।

डॉ. मदन वशिष्ट: आपके शैक्षिक सफलता को आकार देने में आपके माता-पिता ने क्या भूमिका निभाई?

डॉ. अलीम चंदानी : मेरे माता-पिता ने मुझे सर्वश्रेष्ठ शिक्षा देने के लिए भारत में अपनी आजीविका को त्याग किया। उन्होंने सुनिश्चित किया कि मुझे मेरी शिक्षा के लिए हर तरह का समर्थन मिले।.

डॉ. मदन वशिष्ट: प्रशासन में डॉक्टरेट करने के आपके फैसले का कारण क्या था?

डॉ. अलीम चंदानी : डॉ. मदन वशिष्ट, मुझे याद है 2007 में कोयंबटूर में बधिर एक्सपो में मैं आपसे मिला। जब मैंने बताया कि मैंने अपना एम.ए समाप्त कर लिया है और मेरा एन.जी.ओ - ग्लोबल रीच आउट इनिशिएटिव शुरू किया है और आपने मुझे यह सुनिश्चित करने के लिए कहा कि, भारत में बदलाव लाने के लिए, मुझे पी.एच.

डी की डिग्री प्राप्त करनी पड़ेगी, अन्यथा लोग मेरी बात नहीं सुनेंगे। 2008 में, मुझे पीएचडी कार्यक्रम करने का अवसर मिला। आप मेरे प्रोफेसरों में से एक होने के साथ साथ एक परामर्शदाता भी थे। मुझे पता था कि भारत में विशेष शिक्षा कार्यक्रमों में बहुत सी समस्याएं थीं और पर्याप्त बधिर भारतीय विशेषज्ञों नहीं हैं जो आवश्यक उपकरण उपलब्ध कर सकते हैं, इसलिए मैं यहां हूँ।

डॉ. मदन वशिष्ट: क्या इस डिग्री से आपको आपके करियर में मदद मिली? या क्या यहाँ तक पहुंचने के लिए आपको अतिरिक्त शिक्षा और इन-सर्विस प्रशिक्षण प्राप्त करना पड़ा?

डॉ. अलीम चंदानी : मैं अपना पी.एच.डी पूरा करने के लिए बहुत आभारी हूँ। मैं अपनी डिग्री से प्राप्त जानकारी और ज्ञान का उपयोग कर पा रहा हूँ। भले ही मुझे शोध और लेखन में दिलचस्पी नहीं है, फिर भी इन कौशलों का होना महत्वपूर्ण है। ये कौशल हरियाणा और भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के बधिरों के लिए स्कूलों में शिक्षा की स्थिति में शोध लाने में मेरी मदद करती हैं। बधिरों के लिए शिक्षा की गुणवत्ता और बधिर बच्चों के प्रति दृष्टिकोण सहित हमारी शिक्षा प्रणाली के संबंध में बहुत कुछ काम करना है। पांच साल का पी.एच.डी अध्ययन एक लंबा समय है। हालांकि, इस पढ़ाई ने और गैलेडेट के बिजनेस डिपार्टमेंट में पढ़ाना, निश्चित रूप से मेरे कौशल और ज्ञान को आकार देने में मदद की।

डॉ. मदन वशिष्ट: गैलौडेट में आपने कितने साल और कौन से विषय पढ़ाया?

डॉ. अलीम चंदानी : मैंने वहाँ आठ साल तक

अलीम चंदानी, अमंडा फिश, तुषार विरादिया और बबलू कुमार

पढ़ाया। गैलाउडेट में नए छात्रों के लिए प्रथम वर्ष के सेमिनार पाठ्यक्रमों में उनके करियर की सफलता के लिए एक रोडमैप प्रदान करना और विभिन्न व्यक्तित्व परीक्षणों के आधार पर अपने आत्म-प्रतिबिंबों का पता लगाने के अवसर भी शामिल था। मैंने ऐसे व्यवसाय जो सामाजिक प्रभाव दाल सकते हैं , शुरू करने की अवधारणा को प्रोत्साहित करने के लिए सामाजिक उद्यमिता पाठ्यक्रमों को सह-सिखाया है। कई बधिर लोग व्यवसाय शुरू करने के लिए आवश्यक संसाधनों और उपकरणों से अवगत नहीं हैं।

डॉ. मदन वशिष्ट: आपने सेंटम जी.आर.ओ परियोजना कैसे शुरू किया??

डॉ. अलीम चंदानी : गैलाउडेट में सोशल एंटरप्रेनरशिप पढ़ाने के बाद, मैंने बधिरों के लिए एक उद्यमिता केंद्र बनाने का प्रस्ताव विकसित किया, जो बधिर लोगों के लिए एक आश्चर्यजनक जगह होगी जहाँ वे एक साथ बैठकर विचार-विमर्श कर सकते कि किस तरह के व्यवसाय शुरू करें। मेरी बहन के संपर्क के माध्यम से, मेरा प्रस्ताव एयरटेल के अध्यक्ष सुनील भारती मित्तल को भेजा गया था। उन्होंने मुझे नवंबर 2015 में अपने कार्यालय में बुलाया जहाँ मैंने अपना प्रस्ताव प्रस्तुत किया। प्रस्ताव को मंजूरी मिलने पर, मैं नई दिल्ली में बधिरों के लिए एक अत्याधुनिक नेतृत्व और प्रशिक्षण केंद्र बनाने के लिए भारत आ गया।

भारत में लगभग 70 मिलियन विकलांग लोग (पी.डब्ल्यू.डी) हैं। उनमें से केवल एक मिलियन नियोजित हैं। यह एक महत्वपूर्ण समस्या है, जिसके फल:स्वरूप भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में राष्ट्रीय कार्य योजना 2015 बना। 2022 तक विकलांग लोगों के लिए 2.5 मिलियन नौकरियां पैदा करने का लक्ष्य है। ऐसे कई गैर सरकारी संगठन और निगम हैं जिन्होंने विकलांग लोगों को प्रशिक्षण देना शुरू किया है ताकि वे सरकार से धन-राशि के लिए अर्हता प्राप्त कर सकें। हालांकि, उनमें से अधिकतर संस्थाएं श्रवण शक्ति वाले व्यक्तियों द्वारा प्रबंधित हैं। मुझे पता है कि भारत में ऐसे असाधारण बधिर लोग हैं जो प्रधान मंत्री

डॉ. अलीम चंदानी अपने बहन जो ब्रयांट के साथ

के इस चुनौती को स्वीकार करके इन्हे प्रबंधित और समन्वयित कर सकते हैं।

डॉ. मदन वशिष्ट: सेंटम जी.आर.ओ परियोजना का लक्ष्य क्या है?

डॉ. अलीम चंदानी : इसका 3 मुख्य लक्ष्य है:

1. आवश्यक विवरण प्रदान करके पूरे भारत में बधिर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाना।

2. दुभाषियां जैसे समर्थन सेवाएं प्रदान करना।

3. स्व-दीक्षा कौशल - बधिर पहचान, संस्कृति और नेतृत्व कौशल पर आवश्यक ज्ञान प्रदान करते हैं ताकि बधिर व्यक्तियों को उनकी पहचान पर गर्व हो और श्रवण शक्ति वाले लोगों को सांकेतिक भाषा में शिक्षित कर सके।

डॉ. मदन वशिष्ट: क्या आप अब तक अपनी उपलब्धियों से संतुष्ट हैं, या क्या आपको लगता है कि अभी भी और ऊंचाई छूने को बाकि है?

डॉ. अलीम चंदानी : एक अद्भुत टीम जिसने बधिर समुदाय के लिए एक सकारात्मक ब्रांड, सेंटम जी.आर.ओ निर्मित करने में मदद किया , के प्रति मैं नम्र और आभारी हूँ अब, यहाँ आने के डेढ़ साल के बाद, मेरे पास ध्यान केंद्रित करने के लिए कई और लक्ष्य हैं। जबकि हमारे पास हौज़ खास में सेंटम-जी.आर.ओ सेंटर में प्रशिक्षण कार्यक्रम हैं, माता-पिता, नेताओं, दुभाषियों, शिक्षकों और निगम के अधिकारियों जैसे कई बाहरी लोग यह देखने के लिए आते हैं कि हम अपने कार्यक्रम का संचालन कैसे करते हैं, क्योंकि यह सफलता का एक मॉडल है, जो बधिरों के लिए बधिरों द्वारा स्थापित है। दुभाषिया के सिवाय पूरी टीम के सदस्य बधिर है। टीम, प्रशिक्षण के लिए पाठ्यक्रम निर्णय करते है और उसे तैयार करते है, इसमें सुनवाई विशेषज्ञों का कोई प्रभाव नहीं रहता। लोग सलाह और परामर्श के लिए हमारे पास आते हैं। यह मौजूदा बधिर संगठनों को जागृत करने और बधिरों के लिए बेहतर आजीविका के लिए आगे बढ़ने का सही मोका है। विशेष रूप से, आर.पी.डब्ल्यू.डी अधिनियम के पिछले साल पारित होने के साथ, हमें शिक्षा, अभिगम्यता, रोजगार इत्यादि सुधारने पर सिफारिशें भेजकर और अधिक सक्रिय होना चाहिए।

डॉ. मदन वशिष्ट: कौनसे विशिष्ट समर्थन प्रणाली ने आपके लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद की?

डॉ. अलीम चंदानी : मेरी अद्भुत टीम - विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका से आए बधिर विशेषज्ञ, अमंडा फिश, जो भारतीय छात्रों को प्रशिक्षित करने के लिए शिक्षकों (ट्रेन-द-टीचर्स मोड का उपयोग करके) को आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान करती है। दूसरा सौरव रॉयचौधरी, मेरे समर्थन के स्तम्भ, एक संकेत भाषा दुभाषिया और तीसरा, आप, जो सदा मेरे प्रशंसक हैं!

डॉ. मदन वशिष्ट: भारत में बधिर लोगों के लिए आपकी सलाह क्या है जिनके पास अमेरिकी समर्थन प्रणाली नहीं है? वे अपने सपनों को साकार कैसे कर सकते हैं?

डॉ. अलीम चंदानी : बधिर व्यक्तियों और बच्चों को सफल बधिर भूमिका मॉडल से अधिक संपर्क की आवश्यकता होती है ताकि वे यह भी भरोसा कर सके कि वे भी बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं। आर.पी.डब्ल्यू.डी 2016 अधिनियम पर और अधिक जागरूकता के साथ-साथ सीखना कि उनके अधिकारों के लिए वकालत कैसे करें।

डॉ. मदन वशिष्ट: भारत में, सरकार सभी विकलांग बच्चों के लिए "पूर्ण समावेश" पर जोर दे रही है। इसका अर्थ है - विकलांग बच्चों के लिए कोई विशेष विद्यालय न हो। क्या आपको

लगता है कि बधिर बच्चे नियमित स्कूलों में सफलतापूर्वक भाग ले सकते हैं? या सचार में अभिगम्यता के लिए विशेष स्कूल जरूरी हैं?

डॉ. अलीम चंदानी : यह एक चुनौती है। मैंने अब तक विभिन्न राज्यों में लगभग 15 बधिरों के स्कूलों का दौरा किया है, और उनमें से कई पहले से ही समावेशी शिक्षा की अवधारणा को अपना रहे हैं, लेकिन अधिकांश शिक्षकों के पास इस मॉडल को सफलतापूर्वक कार्यान्वित करने के बारे में पूर्व प्रशिक्षण या ज्ञान नहीं है। यह लगभग असंभव है जब तक पूरी कक्षा सांकेतिक भाषा में न हो, तब शायद यह हो पायेगी। बधिरों के लिए विशेष संस्थानों को बनाये रखना होगा जहाँ श्रवण शक्ति वाले शिक्षकों के साथ अधिक से अधिक बधिर शिक्षक मिलकर काम करें। शिक्षकों को, बधिरों के लिए शिक्षण पद्धतियों को अभिनव बनाने के लिए सीखना जरूरी है।

डॉ. मदन वशिष्ट: भारत में बधिर बच्चों के माता-पिता के लिए आपका संदेश क्या है? यहाँ के सीमित संसाधनों को ध्यान में रखते हुए, उन्हें बच्चों को किस प्रकार का समर्थन देना चाहिए?

डॉ. अलीम चंदानी: सभी माता-पिता को यह समझना चाहिए कि सांकेतिक भाषा वास्तव में कैसे बधिर बच्चों के भाषा को विकास करने में मदद कर सकती है। उन्हें जागरूक होने की आवश्यकता है कि बधिर बच्चे सफल बधिर भूमिका मॉडल से मिलकर बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं।

डॉ. मदन वशिष्ट: दुभाषियों के अलावा, आर.आई. टी ने आपको किस प्रकार की सहायता प्रणाली प्रदान की?

डॉ. अलीम चंदानी : आर.आई.टी और गैलाउडेट में मुझे कक्षा में नोट लेने वालों और दुभाषियों का पूर्ण समर्थन मिला।

डॉ. मदन वशिष्ट: क्या आप और कुछ कहना चाहते हैं ...?

डॉ. अलीम चंदानी : भारत आने का मेरा उद्देश्य दो चीजों पर ध्यान केंद्रित करना था।

फरीद ज़कारया, सौरव राय चौधरी और जो ब्रेयांट, डॉ. अलीम चंदानी के साथ

मेरा विश्वास है कि सभी बधिर और सुनने में कठिनाई वाले लोग इन दोने के लिए हकदार हैं:

1. श्रेष्ठ शिक्षा - बधिरों के लिए विभिन्न शिक्षण पद्धतियों में मौजूदा शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान करें। मौजूदा शिक्षकों और बधिर सलाहकारों (सहायक) के बीच गठबंधन तैयार करना और बधिर बच्चों को वास्तविक शिक्षण उपकरण प्रदान करना। इंडियन साइन लैंग्वेज (आई.एस.एल) और लिखित अंग्रेजी का उपयोग करके द्विभाषी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करें। बच्चों के लिए बधिर-अनुकूल कक्षा निर्माण करना।

2. सूचना अभिगम्यता- यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी बधिरों को जानकारी तक समान पहुंच हो, टीवी पर कैप्शनिंग, आई.एस.एल के बारे में और जागरूकता फैलाना और सार्वजनिक घटनाओं में सांकेतिक भाषा के दुभाषियों का होना आदि कदम उठाना चाहिए। हम, भारत में बधिर बहुत लंबे समय से उपेक्षित है। अब समय आ गया है कि हमें भारत के बराबर नागरिक के रूप में शामिल किया जाय। अब समय आ गया है कि समाज हमारे लिए क्या अच्छी है इसका पूर्वधारणा बनाने के बजाय हमारी बात सुने। सहयोगी पर मेरा रूपक यह है कि श्रवण शक्ति वाले दर्शकों जो वर्तमान में हमारे "दुनिया" में काम कर रहे हैं वे यांत्रिकी हैं जबकि बधिर व्यक्तियों को पायलट माना जाना चाहिए। पायलट यांत्रिकी के समर्थन के बिना उड़ नहीं सकते हैं। हम चाहते हैं कि श्रवण शक्ति वाले दर्शक बधिर होने के हमारे व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर हमारी सुनें और बधिर समुदाय के लिए सर्वोत्तम समाधान देने के लिए हमारे साथ काम करें। समय आ गया है कि दायित्व हमे सौंपे, हमारे साथ काम करें और जब आवश्यकता पड़े हमारी सहायता करें, हम निश्चित रूप से ऊंचे उड़ान भरेंगे!

RELIVE

CURRENTLY THERE ARE
1.2 MILLION
PARAPLEGICS/QUADRIPLEGICS
IN INDIA!

SALUTE TO THE INDOMITABLE SPIRIT
& ZEST FOR LIFE DEFYING ALL ODDS

CELEBRATING **10TH YEAR** OF
SPINAL CORD INJURY AWARENESS DAY
(25TH JUNE, 2018)

Nina FOUNDATION

An NGO for rehabilitation of
friends with Spinal Cord Injury

WE THANK ALL
FOR WALKING WITH US FOR
18 GLORIOUS YEARS!

www.ninafoundation.org

Creative by: kreateandyoung.com

सीमाओं से परे

सुचित्रा अय्यप्पा

एक लेखक, ब्लॉगर, गीतकार और पेशेवर , सेरेब्रल पाल्सी युक्त भारत के पहले इंजीनियर, अश्विन कार्तिक के पास प्रसिद्धि के कई दावे हैं, पता लगाती हैं सुचित्रा अय्यप्पा।

बेंगलुरु के मान्यता टेक पार्क में ए.एन.जेड (ANZ) की सुविधा देश में बैंक के सबसे बड़े ऑपरेशन केंद्रों में से एक है। यह भारत के पहले सेरेब्रल पैल्सि युक्त इंजीनियर (क्वाड्रिप्लेजिक) अश्विन कार्तिक एस एन का कार्यस्थल भी है, जो इस संगठन में एक सफल सोल्यूशन आर्किटेक्ट हैं। वह व्हीलचेयर उपयोगकर्ता हो सकता है, उन्हें क्वाड्रिप्लेजिया हो सकता है, और एक परिचर पर पूरी तरह से निर्भर हो सकता है, लेकिन इस 33 वर्षीय ने एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता के रूप में टीम में अपना पहचान बनाया है, जो अत्यधिक तनावपूर्ण माहौल में हर किसी की तरह समय सीमा से जूझ रहा है।

सुंदर, तेज और स्पष्ट, अश्विन की कहानी न केवल प्रतिकूल स्थिति में उनके धैर्य, दृढ़ संकल्प और साहस के बारे में है। यह एक बेटे के लिए उसके माँ के बलिदान, एक प्यारे परिवार की खुशी,एक असाधारण दोस्ती और सबसे ज्यादा एक सशक्तिकरण जिसने उन्हें ऐसा आदमी बनाया है जो वे आज है, की कहानी भी है।

जन्म के वक़्त दिमाग में ऑक्सीजन की आपूर्ति में कमी के परिणामस्वरूप अश्विन को गंभीर रूप से सेरेब्रल पाल्सी हुआ जिससे उनके चारों अंग प्रभावित हुए। क्रूर निदान और चिकित्सा घोषणा कि आजीवन शिशु एक जड़ होगा, उसके परिवार के लिए एक कठिन यात्रा की शुरुआत थी।

अश्विन की माँ, एक संरक्षित युवती को अपने पति के साथ अपने बड़े बेटे को छोड़कर, अश्विन के पुनर्वास के लिए यात्रा करना पड़ा। अश्विन के पिता को, एक हस्तांतरणीय नौकरी वाले बैंकर, जो पितृत्व का सक्रिय व्यक्तिगत भागीदारी निभाते थे, अपने परिवार की देखभाल

और काम की मांगों को संतुलित करना पड़ा।

अपने बच्चे को यथासंभव सामान्य जीवन देने के लिए दृढ़-संकल्प, अश्विन को नियमित स्कूल में दाखिल किया गया था। अश्विन याद करते हैं कि कैसे उनकी माँ स्कूल के द्वार के बाहर फुटपाथ पर बैठती थी ताकि वह उसे खिला सके और शौचालय ले जा सके। अध्ययन के लिए वे अपने सहपाठियों से किताबें उधार लेते थे, जिसका, अपने जिम्मेदारियों के साथ-साथ उसके माता-पिता और भाई प्रतिलिपि बनाकर किताबों को वापस देते थे । अश्विन कहते हैं, "लोग कहते हैं कि मैं बदकिस्मत हूँ, लेकिन मेरे जैसे परिवार पाकर, मैं दुनिया का सबसे भाग्यशाली व्यक्ति हूँ"।

जब अश्विन 12 वर्ष के थे, तब उनके जीवन ने क्रूर मोड़ लिया, उनके पिता जो उनके परिवार के रीढ़ के हड्डी थे, की अचानक मृत्यु हो गयी, जिसके कारण उसके मां को परिवार संभालना पड़ा। आश्विन याद करते हैं, "वह कठिन समय था लेकिन माँ ने आत्म दयालुता या शिकायत के बिना और सिर्फ परिवार के बारे में सोचते हुए इसका सामना किया"।

सभी प्रयासों का फल प्राप्त हुआ जब अश्विन ने 10 वीं मानक परीक्षा में 84% स्कोर किया, सेरेब्रल पाल्सी वाले छात्र द्वारा उच्चतम स्कोर। और फिर भी, संघर्ष खत्म नहीं हुआ। जब अश्विन ने 12वीं बोर्ड परीक्षा में सफलता के बाद इंजीनियरिंग करने का फैसला किया तो उन्हें कॉमन एंट्रेंस टेस्ट (सी.ई.टी) में उत्तीर्ण होने के बावजूद प्रवेश से वंचित कर दिया गया। "एक विकलांग उम्मीदवार के रूप में मेरी जांच डॉक्टरों के एक पैनल ने की थी, जिन्होंने मुझे परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करने के बावजूद पाठ्यक्रम में दाखिला लेने के लिए योग्य नहीं समझा। हम दस घंटों तक इंतजार कर रहे थे क्योंकि वे इस मामले पर विचार-विमर्श करते थे ... मैं जवाब में 'नहीं' लेना नहीं चाहता था ... "याद करते हुए वे कहते है। बहुत समझा बुझाने और आश्वासन देने के बाद,अंततः अश्विन को कंप्यूटर विज्ञान में बी.ई. करने की अनुमति दी गई।

इस मोड़ पर, उनके मित्र और सहपाठी भरत शर्मा, जो सी.ई.टी में अपने पहले प्रयास में असफल रहे, इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम के दौरान आश्विन के लिपिक बनने के लिए स्वेच्छापूर्ण आगे आए।इंजीनियर बनने के अपने महत्वाकांक्षा को छोड़कर अपने अध्ययनों के साथ समझौता करके और अपने माता-पिता की इच्छाओं के खिलाफ जाकर भरत ने अश्विन की चुनौतियों को अपनाया,ताकि अश्विन सेरेब्रल पाल्सी युक्त भारत का पहला सफल इंजीनियर बन सके।

"वे लगातार अपनी सीमाओं को धकेलते हैं, और आरामदायक स्थिति म हमेशा बेचैन है।"

इसके बावजूद, निराशा निरंतर जारी रही। अश्विन ने अगले दो साल नौकरी की तलाश में बिताया। उनकी लगभग 45 जगहों में साक्षात्कार किया था। उन्होंने लगभग सभी साक्षात्कारों को पार किया, लेकिन शंकित मानव संसाधन कर्मियों ने उन्हें अस्वीकार किया। आखिरकार, इनेबल इंडिया (Enable India) के मदद से उन्हें एम्फ़ासिस

(Mphasis) में नौकरी मिली जहाँ उन्होंने 2015 तक काम किया। अपनी समर्पण और कड़ी मेहनत के कारण उन्होंने उत्कृष्टता के कई पुरस्कार जीते, लेकिन जब 2013 में नई दिल्ली में उन्हें भारत के राष्ट्रपति श्री. प्रणाब मुखर्जी के हाथों सर्वश्रेष्ठ विकलांग कर्मचारी का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ, यह उनके जीवन का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार था।

वहां दो साल तक काम करने के बाद, अश्विन को लगा की अब आगे बढ़ना है और वे ए.एन. जेड टीम में शामिल हो गए। आज, वे सुबह 6.30 बजे काम के लिए ऑफिस कैब द्वारा निकलते हैं, एक तरफ़ा रास्ता 25 कि.मी से अधिक दूर है, और रात को 8.30 बजे, जिम में एक कसरत के बाद घर लौटते हैं। वे खुद मानते है कि वे लगातार अपनी सीमाओं को धकेलते हैं, और आरामदायक स्थिति में हमेशा बेचैन है। उनके नायक - उनकी माँ, स्टीफन हॉकिंग और सचिन तेंदुलकर हैं।

दरअसल, सचिन के साथ प्रशंसक के रूप में शुरू हुई मुलाकात, एक लंबी दोस्ती की शुरुआत थी। वे बताते हैं "मैंने यह कल्पना भी नहीं किया कि सचिन तेंदुलकर, जिसका मैं अत्यधिक सराहना करता हूँ, मुझेसे कहते है कि मैं उन्हें प्रेरित करता हूँ!" हर साल, उनके जन्मदिन पर सचिन शुभकामनाएं देते हैं, जो उनके विनम्रता और दयालुता को प्रदर्शित करता है और उनके प्रति अश्विन के आदर को मजबूत करता है।

अश्विन अपने नियोक्ता, ए.एन.जेड की बड़ी तारीफ़ करते हैं, इस संसथान को समावेशन में प्रेरणास्रोत मानते हैं। आश्विन के निजी जरूरतों में सहायता करने के लिए एक व्यक्तिगत परिचर को नियुक्त किया गया है, ताकि आश्विन अपने काम में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन दिखा सकें। आज NASSCOM जैसी कॉरपोरेट मीटिंग्स में अपने संगठन का प्रतिनिधित्व करते हैं और अपने एम.डी के साथ 2016 में NASSCOM द्वारा उनके कंपनी को प्रदत्त 'सबसे समावेशी संगठन' पुरस्कार प्राप्त किया।

कार्यस्थल पर, अश्विन को पूरी तरह से पेशेवर के रूप में सम्मानित किया जाता है और उन्हें एक मजेदार व्यक्ति भी माना जाता है। उनके सहकर्मी कृष्णमोहन ने खुलासा किया कि अश्विन सब के लिए एक महान प्रेरणा है, जो उन्हें काम करने के लिए प्रेरित करते हैं। "अश्विन एक असाधारण इंसान है ... दयालु और उदार", वे कहते हैं।

लक्ष्मी कुलकर्णी -जो पिछले दो वर्षों से उनके रिपोर्टिंग मैनेजर हैं- का मानना है कि अश्विन संसथान में ताकत लाते हैं। "अश्विन अपने वरिष्ठों के समर्थन पर निर्भर नहीं रहते है। वे अत्यधिक स्वावलंबी हैं ", वह कहती है। ""आखिरकार प्रत्येक संगठन का मुख्य केंद्र-बिन्दु लागत और इसको पाने की दिशा में अधिकतम दक्षता हासिल करना है। इसलिए, हमारे जैसे टीमों पर लगातार दबाव रहता है जो व्यापार का समर्थन करते हैं ", वह साझा करती है। "विकास हितधारकों के साथ अश्विन का अंतरापृष्ठ महत्वपूर्ण है क्योंकि सही जानकारी प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है। परामर्श, और चर्चा के बाद वह सफलता के दृष्टिकोण से निष्पादित करता है।

> अश्विन की कहानी न केवल प्रतिकूल स्थिति में उनके धैर्य, दृढ़ संकल्प और साहस के बारे में है। यह एक बेटे के लिए उसके माँ के बलिदान, एक प्यारे परिवार की खुशी, एक असाधारण दोस्तीकी कहानी भी है।

"लक्ष्मी प्रशंसा करती हैं कि अश्विन कार्यस्थल पर पूर्वाग्रहों

> अश्विन जन्म से ही एक प्राप्तकर्ता रहे हैं, यह साबित करते हुए कि सही समर्थन, शिक्षा और सशक्तिकरण के साथ, विकलांग लोग भी औरों के समान सब कुछ हासिल कर सकते हैं।

को कैसे तोड़ते हैं और उसके समेत सभी को महसूस कराते हैं "अगर अश्विन ऐसा कर सकता है, तो मैं भी कर सकती हूँ।" उसके पर्यवेक्षक के रूप में, उनका माननो है कि अश्विन को बाकी लोगों से कुछ भी अलग नहीं करता हैं। "टीम में हर किसी की तरह, उसे आगे धकेला जाता है और चुनौती दी जाती है, जो छिपी क्षमताओं को बाहर लाने के लिए जरूरी है।"

अश्विन को ऊँचे पदों के लिए आवेदन करने के लिए बराबर का अवसर दिया जाता है और टीम में हर किसी की तरह प्रदर्शन पर मूल्यांकन किया जाता है। उनकी सबसे बड़ी संपत्ति? लक्ष्मी घोषित करती हैं , "अश्विन दिल से बोलता है!" हर समारोह में हमेशा उसे भाषण देने का काम सौंपा जाता है, जिसे वह बहुत कम तैयारी के साथ, वह खूब निभाता है।

दरअसल, अश्विन अंततः एक पेशेवर लेखक बनना चाहते हैं। उनका पहला उपन्यास ... द रेलिक (The Relic), जिसे उन्होंने अपने दृष्टिहीन मित्र के साथ लिखा, एक ऐतिहासिक थ्रिलर है। दफ्तर में पूरे दिन काम करने के बाद, एक उंगली से दर्दनाक रूप से टाइप करते, वे अपने अगली पुस्तक लिख रहे और फिर, उसका साप्ताहिक ब्लॉग, 'मंडे ट्रक्लूशन्स'(Monday Truclusions) है जो जीवन के सकारात्मक पहलुओं पर केंद्रित है । स्पष्ट रूप से उनका जुनून और दृढ़ निश्चय ही उन्हें आगे बढ़ाती है।

इसके अलावा, यह बहुमुखी युवा एक कवि भी हैं । "यह मेरे दोस्तों, जो लड़कियों से प्यार करते थे, के लिए प्रेम-पत्र लिखने से शुरू हुआ, उन्होंने अपनी आंखों में एक झुर्रियों के साथ कबूल किया। मुंबई स्थित संगीतकार रोहन पटेल के साथ मिलकर आश्विन ने एक 70 मिनट की फिल्म के चार गानों के लिए बोल लिखे हैं, जो जल्द ही कार्टून नेटवर्क पर रिलीज़ होने वाली है।

उनका सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित 3-डी एनीमेशन फिल्म रबी और द टोर्टू - हंट फॉर द गोल्डन सीड (Rabby and the Tortue - Hunt for the Golden Seed) के गीत के लिए बोल लिखना था। दुनिया भर के पेशेवरों की एक टीम के साथ काम करते हुए, एनिमेटर ऋषिकेश जाधव के नेतृत्व में, इस रमणीय फिल्म ने गोवा अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में पुरस्कार जीता है और मियामी और बर्लिन दोनों फिल्म समारोहों में सेमीफाइनल तक पहुंचा।

I don't have the speed
But the golden seed
Has brought the power I need
But not for my own need

I was a child living alone
Weak and lonely I have grown
But now I am stronger
Yes I am not alone any long

इस फिल्म में आश्विन का भावात्मक गीत 'आए फील स्ट्रांगर' (I Feel Stronger) सशक्तिकरण के कारण आज़ाद महसूस करने की उनके खुद के कहानी को व्यक्त करती है।

अश्विन के परिवार उनके मित्र भरत के साथ विस्तृत हो गया , जिसे उन्होंने कृतज्ञता और प्यार में गले लगा लिया, सभी एक ही छत के नीचे एक साथ रहते हैं।

परीक्षणों के बावजूद यह एक खुश, उत्साहजनक कहानी है। भरपूर जिंदगी जी कर, अश्विन ने यह साबित कर दिया कि वे जन्म से एक प्राप्तकर्ता रहे हैं, यह साबित करते हुए कि सही समर्थन,शिक्षा और सशक्तिकरण के साथ, विकलांग लोग भी औरों के समान सब कुछ हासिल कर सकते हैं। अश्विन का जीवन यह भी दर्शाता है कि सभी कठिनाइयों और चुनौतियों के बावजूद, कोई भी व्यक्ति अपने जीवन को सकारात्मकता से आगे बढ़ा सकता है और खुद के भाग्य का स्वामी बन सकता है।

Creative MOVEMENT Therapy Certification Course

CMTAI

Certified by CID-UNESCO (IDC, France) and CMTAI (Member of ADTA), this course is designed to help participants develop their personal movement language for holistic growth.

By fusing the theoretical framework with creative healing movement experiences, it empowers students with the tools to help individuals and groups therapeutically.

TRAINING

270 hours (over 3 months, with 10 hours of Personal Therapy)

POST COURSE

72 hours of field work, along with 10 hours of supervision

Montfort Spirituality Center, 84, Swamy Vivekananda Rd,
Indira Nagar II Stage, Hoysala Nagar, Indiranagar,
Bengaluru - 560038

Aug 5 - 15, 2018
Sep 2 - 12, 2018
Oct 21 - 31, 2018

Preethi
preethi@cmtai.org
9886059268

समाचार और टिप्पणियाँ

ऊफ! ऊफ! सेवा कुत्ते के बारे में क्या ख़याल है?

सेवा कुत्तों को किसी भी विकलांग व्यक्ति की विशिष्ट आवश्यकताओं में, और मल्टीप्ल स्क्लेरोसिस (एम. एस) वाले लोगों की सहायता के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, टम्मी डेक्रोटो जिसको मल्टीप्ल स्क्लेरोसिस है, का सेवा कुत्ता लोगन, दैनिक सरल कार्यों में उसकी मदद करता है।उसका कहना है कि लोगन के साहचर्य ने उसके जीवन को बदल दिया। लोगन फर्श से वस्तुओं को उठाने, टेबल से सेल फोन लाने, अपने नाक से लाइट स्विच को घुमाने, फ्रिज के हैंडल को उसमे लपेटे रस्सी के सहायता से खोलने में आपकी सहायता कर सकता है।

सेवा कुत्तों को संतुलन में सहायता करने के लिए भी प्रशिक्षित किया जा सकता है या फर्श से उठते वक्त मालिकों

को अपने शरीर से सहारे देने के लिए सेवा कुत्तों को प्रशिक्षित किया जा सकता है।सेवा-कुत्ता खरीदनेवालों को इलियट लुईस एम.एस सेंटर के न्यूरोलॉजिस्ट और मेडिकल डायरेक्टर डॉ.एलन लाती, का सलाह हैं कि वे एक कुत्ते को खरीदकर अपने आवश्यकता के अनुसार एक निजी कुत्ते ट्रेनर के सहायता से एम.एस- संबंधित आदेश जैसे गिरे हुए वस्तु को उठाना, में प्रशिक्षित करें। उन संगठनों से भी समर्थन प्राप्त किया जा सकता है जो एम.एस से प्रभावित लोगों के लिए सेवा कुत्तों को प्रशिक्षित करते हैं।

डॉ. लाती के अनुसार, सेवा कुत्ता प्राप्त करने की प्रक्रिया बहुत लंबी, पर फायदेमंद है। सेवा प्रस्तुत करने के अलावा, सेवा कुत्ता एम.एस से प्रभावित व्यक्तियों को पृथक होने से रोकने में मदद करता है, क्योंकि कुत्ता आपके बातों को सुनता है, आपके आंखों से आंख मिलाता है और आपको बहुत प्यार और आपके जीवन को एक उद्देश्य देता है।

स्रोत: एबल त्रैव

केंद्र सुलभ इमारतों पर विवरण चाहता है

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के तहत दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग (डी.ई.पी.डब्ल्यू.डी) ने दिल्ली सरकार और स्थानीय निकायों के विभिन्न विभागों से अपने अधिकार क्षेत्र के तहत सुलभ सार्वजनिक भवनों और स्थानों की संख्या पर विवरण मांगा है। उसने इन विभागों को अपने अधिकार क्षेत्र के तहत सभी सार्वजनिक इमारतों को, सुलभ भारत अभियान के तहत, अभिगम्य बनाने के लिए कार्य योजना तैयार करने के लिए कहा है। इसके लिए विकलांग व्यक्तियों के अंतर्राष्ट्रीय दिवस , 3 दिसंबर तक की एक निश्चित समयरेखा भी दिया है।

दिल्ली में, 23 इमारतों को अभिगम्य बनाने के लिए पहचाना गया और केंद्र सरकार ने दिल्ली सरकार के प्रस्तावों के आधार पर उसमे से 19 के लिए धनराशि रिहा किया है।हालांकि, इसको "सुलभ भारत" अभियान से आगे बढ़ाते हुए , डी.ई.पी.डब्ल्यू.डी (DEPwD) ने आठ श्रेणियों का प्रस्ताव दिया है, जिसमें 250 से अधिक सार्वजनिक इमारतें , शैक्षिक संस्थान, स्वास्थ्य सुविधाएँ और कार्यालय भवनें शामिल हैं। डी.एन.पी.डब्ल्यू.डी के सचिव शकुंतला गामलिन के अनुसार अगर राष्ट्रीय राजधानी को "बाधा मुक्त पर्यावरण" और "समावेशी" के एक प्रमुख उदाहरण में बदला जा सकता है, तो इससे अभियान की दृश्यता में वृद्धि होगी और दूसरों के लिए एक आदर्श के रूप में कार्य करेगी।

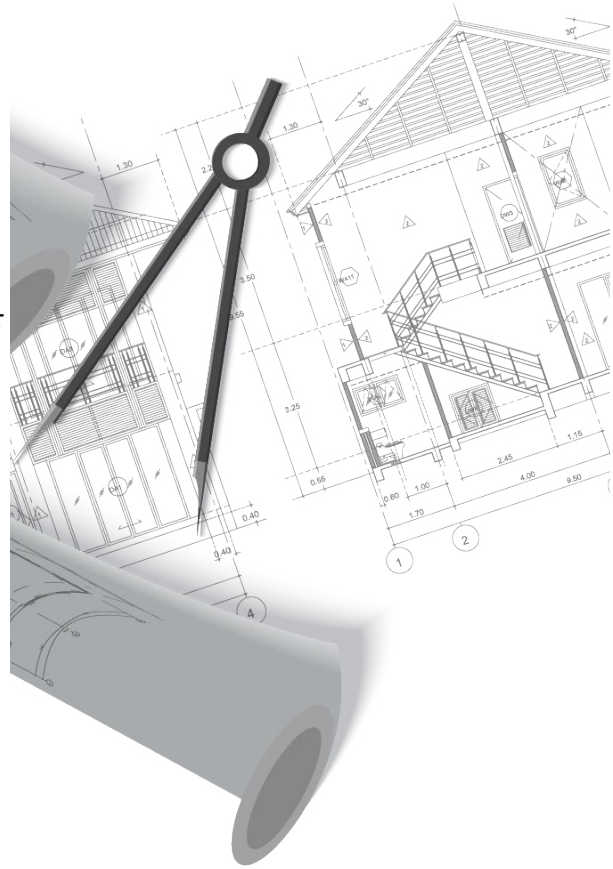

स्रोत: पी.टी.अई

ओडिशा में विकलांगता पर जागरूकता अभियान

©ओडिशा राज्य विकलांग नेटवर्क

सशक्त, विकलांगता मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने, समावेश को बढ़ावा देने और विकलांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम 2016 और मौजूदा सरकारी सुविधाओं के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए एक राज्यव्यापी अभियान, उड़ीसा राज्य विकलांगता नेटवर्क द्वारा पुरी से ध्वजांकित किया गया है। यह 13 जून, 2018 को नायागढ़ में समाप्त होगा।

विकलांगता कार्यकर्ता श्रुति मोहोपात्रा, जो अभियान का नेतृत्व कर रहे हैं, के अनुसार, विकलांग लोग सहित ओडिशा के सभी निवासियॉं, समाज के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं, लेकिन उन्हें अक्सर पीछे छोड़ दिया जाता है। अभियान समावेशन पर केंद्रित है और ओडिशा में हर किसी को आत्मनिर्भर और स्वतंत्र जीवन जीने में मदद करेगा। इस अभियान द्वारा नवंबर तक लगभग दस लाख लोगों को संवेदनशील बनाया जाएगा।मोबाइल फोटो प्रदर्शनी के साथ एक जागरूकता रथ पूरे राज्य में अभियान दल के साथ आगे बढ़ रही है। इसके अलावा, अभियान में कानून, भूमिकाओं और जिम्मेदारियों पर चर्चा, विश्लेषण और समझने के लिए कई जागरूकता कार्यक्रम शामिल हैं।

स्रोत: द टेलीग्राफ

हीमोफिलिया: विकलांगता को रोकने के लिए प्रोफिलाक्सिस थेरेपी

हीमोफिलिया-एक रक्त अव्यवस्था जो ज्यादातर पुरुषों को प्रभावित करता है -आर.पी.डब्ल्यू.डी अधिनियम 2016 के तहत विकलांगता सूची में शामिल किया गया है।गंभीर हेमोफिलिया वाले लोग मामूली चोटों के कारण भी दिन या सप्ताह तक भी खून बहाते हैं; स्वचालित रूप से भी उनका खून बहता हैं। जोड़ों में बार-बार के रक्तस्राव के कारण हेमोफिलिया वाले लोग उत्तरोत्तर विकलांग हो जाते हैं।लगभग 100,000 भारतीयों को हेमोफिलिया होने का अनुमान है, और कई प्रभावित व्यक्ति अपनी शिक्षा को बंद कर देते हैं और बेरोजगार रहते हैं, इसके विपरीत अन्य देशों में हेमोफिलिया के प्रभाव से विकलांग लोग संपर्क और साहसिक खेल में भाग लेते हैं।

इसके लिए एक प्रमुख कारण है, भारत में, हेमोफिलिया का इलाज, रोगनिवारक तौर पर ही होता है , यानी, अगर खून बह रहा है तो कारक दी जाती हैं। इसके विपरीत, 'प्रतिस्थापन थेरेपी' या 'प्रोफिलाक्सिस थेरेपी' में अनुमानित रक्तस्राव को रोकने के लिए नियमित रूप से क्लोटिंग कारक दिया जाता है। यदि छोटी उम्र में ही शुरू किया जाता है, तो यह संयुक्त रोग की प्रगति को रोक सकता है और / या इसके कारण होने वाली विकलांगता को रोका जा सकता है।.

हाल के दिनों में भारत भर के कुछ केंद्रों ने प्रायोगिक प्रोफिलाक्सिस कार्यक्रमों को सीमित, लेकिन बहुत ही उत्साहजनक परिणामों के साथ स्थापित किया है, यह साबित करते हुए कि इस तरह के कार्यक्रम भारत में प्रभावी ढंग से चलाए जा सकते हैं। अगला कदम भारत भर में इस चिकित्सा को ले जाना है। तीसरे पीढ़ी के पुनः संयोजक क्लोटिंग कारकों जैसे उपचार विकल्प इसको आगे बढ़ाएंगे, क्योंकि नए एजेंट कमरे के तापमान में स्थिर हैं और , मरीजों के सुविधानुसार उनके घर के पास एक केंद्र में वितरित किया जा सकता है।यह 'होम थैरेपी' नियमित उपचार के साथ-साथ क्लोटिंग कारकों की कुल खपत को कम करने के लिए बेहतर अनुपालन की अनुमति देगा।

स्रोत: द इकोनोमिक टाइम्स

सड़क दुर्घटना ग्रस्त लोगों को मुआवजे दस गुना बढ़ाया गया

अब तक, सड़क दुर्घटना के वजह से मौत, विकलांगता या मामूली चोट की स्थिति में पीड़ितों या उनके नज़दीकी रिश्तेदारों को भुगतान किया गया मुआवजा बहुत कम रहा है। अब, भारत सरकार की अधिसूचना के तहत यह मुआवजा वर्तमान दरों से दस गुना बढ़ाया गया है।24 साल के अंतराल के बाद दरें को बदला जा रहा है। नए मानदंडों के अनुसार, घातक दुर्घटनाओं में फसें लोगों के निकटतम रिश्तेदारों को 5 लाख रुपये का मुआवजा दिया जाएगा; विकलांगता के स्तर के आधार पर स्थायी विकलांगता के लिए मुआवजे 50,000 रुपये और 5 लाख के बीच होगा,और यह सालाना 5% बढ़ाया जाएगा।

मृत्यु की स्थिति में मुआवजे के लिए वर्तमान दर रुपया 50,000 और स्थायी विकलांगता के लिए रुपया 25,000 है। यह सभी बीमा कंपनियों पर बाध्यकारी है। हालांकि, यह देखा गया है कि ये रकम नगण्य हैं और कोई दुर्घटना पीड़ित इस कम मुआवजे को स्वीकार नहीं करते है जिससे वे सभी मोटर एक्सीडेंट क्लैम्स ट्रिब्यूनल (एम.ए.सी.टी) से अपील करते हैं।मोटर वाहन अधिनियम, जीवन की बढ़ी हुई लागत को ध्यान में रखते हुए मुआवजे की इन दरों में संशोधन की अनुमति देता है। इन मुकदमेबाजी मुद्दों को कम करने के लिए नई दरें तय की गई हैं, लेकिन अभी भी उच्च मुआवजे की मांग करने वाले लोग तदनुसार अपील कर सकते हैं।

स्रोत: पी.टी.अई

मुंबई के डब्बावालों से सीख

डॉ.केतना .एल. मेहता

दक्षता और समय प्रबंधन में सबक सीखने के लिए मुंबई के अद्भुत डब्बावालों को देखो, पुष्टि करती हैं डॉ.केतना. एल.मेहता, संस्थापक ट्रस्टी, नीना फाउंडेशन।

हम में से अधिकांश, कविता 'to Realize' से परिचित हैं, जो संक्षेप में समय के मूल्य को दोहराता है।

मुंबई के डब्बावाले अपने समय प्रबंधन के लिए विश्वभर प्रसिद्ध हैं। बी स्कूल के छात्रों को सीखने के प्रतिमान के रूप में 'सिक्स सिग्मा' पर जोर देने के साथ गुणवत्ता प्रणालियों और प्रबंधन के गुणों से अवगत कराया जाता है।

डब्बावाल्ला, मुंबई का एक ऐसा व्यक्ति है जिसका काम घरों से दोपहर के ताज़ा भोजन के बक्सों को लोगों के दफ्तर तक पहुँचाना है। हालांकि काम सरल लगता है, यह वास्तव में शताब्दी पुरानी बेहद विशिष्ट व्यापार है जो मुंबई की संस्कृति का अभिन्न अंग बन गया है।

मुंबई भारत का सबसे घनी आबादी वाला शहर है जहाँ यातायात का एक बड़ा प्रवाह है। इस वजह से कार्यस्थलों के लिए ट्रेन से लंबी यात्रा करने वाले लोगों की संख्या ज्यादा है। आमतौर पर डब्बावाला घरों से या डब्बा निर्माताओं (जो वास्तव में भोजन पकाते हैं) से, साइकिल पर डब्बा बटोरते हैं। चूंकि अधिकांश डब्बावाल अशिक्षित हैं डब्बों में अलग किस्म की रंगीली या अन्य विशिष्ट निशान पायी जाती है।

इसके बाद डब्बावाला उन्हें एक नामित सॉर्टिंग स्थान पर ले जाता है, जहां सभी डब्बावाले, डब्बों को समूहों में छाँटते हैं। इन डब्बों के समूह को ट्रेन के कोच में रखा जाता है, जिसमें बॉक्स के गंतव्य की पहचान करने के लिए चिह्न होते हैं (आमतौर पर डब्बों के लिए ट्रेन में एक निर्दिष्ट पेटी होती है)।चिह्नों में रेलवे स्टेशन और इमारत के पता जहाँ इन डब्बों को वितरित करना होगा, शामिल किया जाता है। प्रत्येक स्टेशन पर, डब्बों को स्थानीय डब्बावाला के पास सौंपा जाता हैं, जो उन्हें वितरित करता है। दोपहर के भोजन के बाद,खाली डब्बों को फिर से एकत्र किया जाता है और संबंधित घरों तक वापस भेज दिया जाता है।

एक सर्वेक्षण के मुताबिक, हर 6,000,000 वितरण में केवल एक गलती होती है। अमेरिकी व्यापार पत्रिका फोर्ब्स ने मुंबई डब्बावाला की परिशुद्धता के लिए सिक्स सिग्मा प्रदर्शन (Six Sigma Performence) रेटिंग दिया है । वाह!

बी.बी.सी (BBC)

"ToRealise"

To realise the value of one year:

Ask a student who has failed a final exam.

To realise the value of one month:

Ask a mother who has given birth to a premature baby.

To realise the value of one week:

Ask an editor of a weekly newspaper.

To realise the value of one hour:

Ask the lovers who are waiting to meet.

To realise the value of one minute:

Ask a person who has missed the train, bus or plane.

To realise the value of one second:

Ask a person who has survived an accident.

To realise the value of one millisecond:

Ask the person who has won a silver medal in the Olympics.

ने डब्बावालों पर एक वृत्तचित्र तैयार किया है, और अपने भारत की यात्रा के दौरान प्रिंस चार्ल्स ने डब्बावालों के समय-सारणी के अनुरूप उनसे मुलाकात किया। भारत के विख्यात बिज़नेस स्कूलों में अतिथि व्याख्यान देने के लिए कुछ डब्बावालों को आमंत्रित किया गया है।सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि डब्बावालों की सफलता में कोई आधुनिक तकनीक नहीं है। उनकी लोकप्रियता का मुख्य कारण लोगों को घर पर बने भोजन को समय पर वितरित करना।

> एक सर्वेक्षण के मुताबिक, हर 6,000,000 वितरण में केवल एक गलती होता है। अमेरिकी व्यापार पत्रिका फोर्ब्स ने मुंबई डब्बावाला की परिशुद्धता के लिए सिक्स सिग्मा प्रदर्शन रेटिंग दिया है । वाह!

मुंबई के मॉनसून जैसे अत्यंत मौसम के दिनों में भी सेवा निर्बाध है। दोनों सिरों पर स्थानीय डब्बावाले ग्राहकों को व्यक्तिगत रूप से जानते है, जिसके कारण भरोसे की कमी का कोई सवाल ही नहीं उठता। साथ ही, वे उन स्थानीय क्षेत्रों के प्रति आदी हैं जिसके कारण वे किसी भी गंतव्य तक पहुंच सकते हैं।

99.99% सफलता दर, समय पर, हर बार!वे कैसे प्राप्त कर पाते हैं?!

दफ्तर जानेवाले हर व्यक्ति को भूख तृप्त करने के लिए, समय पर, घर से खाने का डब्बा मिलता है। डब्बावाला आम तौर पर अशिक्षित और अनपढ़ होते हैं, कई लोग घड़ी भी नहीं पहनते , लेकिन वे दिन-प्रतिदिन छह सिग्मा स्तर पर प्रदर्शन करते हैं।

कल्पना कीजिए अगर एक डब्बावाले सोचाता, "मैं सुबह 5.15 उठने के लिए बहुत थक गया हूँ, मैं इसके बजाय 6.15 को उठूंगा।" यह 15 ग्राहकों को प्रभावित करेगा जिन्हें अपने दैनिक भोजन के बिना रहना पड़ेगा।

डब्बावालों की कार्य कुशलता के लिए प्रमुख कारण उनका यह अहसास कि ग्राहक ही उनके अन्नदाता है, और उन्हें दोपहर का भोजन पहुँचाना ही उनका मुख्य काम है।

शायद ब्रांडों पर महत्व देने वाले प्रबंधन स्नातकों को फील्ड इंटर्नशिप के लिए कड़ी मेहनत, दोष रहित और कुशल डब्बावालों के पास जाना चाहिए। पोलैंड या जापान जैसे विदेशी इलाकों में अंतरराष्ट्रीय इंटर्नशिप की तलाश करने के बजाय वे भारत में ही समय प्रबंधन की मूल बातें सीखें।

'To Realise'कविता में हम इन दो पंक्तियों को जोड़ सकते हैं:

To realizerealise the value of a sumptuous homemade lunch in the office miles away, eachday:

Ask the Mumbai Dabbawalla the secret of his efficiency and time management.

कभी हार मत मानो!

ए.के. सिंह

वह बिहार के पिछड़े गांव में पैदा हुए बधिर, शर्मीला लड़का था। आज, वह एक अग्रणी पी.एस.ई (PSE) में अग्रणी प्रबंधक हैं।

ए.के. सिंह, महाप्रबंधक-वित्त, सी.एम.पी.डी.आई (कोल इंडिया लिमिटेड) अपने जीवन और करियर पथ के प्रमुख मोड़ साझा करते हैं।

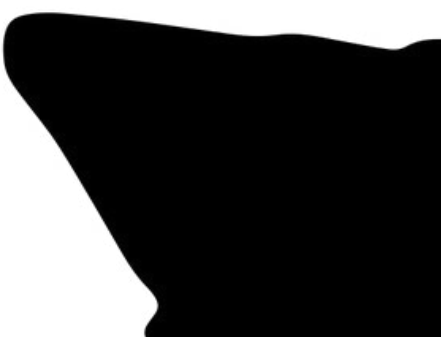

मैं बिहार के एक बहुत पिछड़े गांव में पैदा हुआ जहाँ मैंने स्कूली शिक्षा प्राप्त की थी। मेरे पिता जमशेदपुर में टाटा कंपनी में काम कर रहे थे और साल में केवल एक या दो बार शायद कुछ समारोहों के दौरान गावं को आते थे। मेरी माँ, मेरे भाई बहन और मैं अपने अन्य रिश्तेदारों के साथ गांव में रहते थे।

एक बार, हमारे क्षेत्र में महामारी - शायद टाइफोइड फ़ैली थी। मैं भी इसका शिकार हुआ, इतना कि मेरे जीवित रहने की संभावना भी कम था। मैं बच गया। हालांकि, टाइफोइड ने मेरे कान से दिमाग को ध्वनि व्यक्त करनेवाले तंत्रिकाओं को नष्ट कर दिया, और मैंने धीरे-धीरे अपनी सुनवाई खो दी।

दुख की बात यह थी कि कोई भी इसे समझ या पहचान नहीं पाया। मेरे चाचा मुझे बहुत चाहते थे। क्योंकि मुझे सुनाई नहीं दे रहा था मैंने उनके आदेशों का पालन नहीं किया, इसलिए उन्हें लगा कि मैं घमंडी हो गया

ए.के.सिंह

हूँ और वे मुझे बेकार समझने लगे। स्कूल में मेरे सहपाठी मुझे 'बहरा' बुलाते थे, जिसने मुझे बहुत चोट पहुँचाया। गाँव के लोग मुझपर तरस खा रहे थे। इसने मुझमें विद्रोह का एक तत्व उत्पन्न किया। मैं अपने दोस्तों को टालने लगा औरैं एक अंतर्मुखी बन गया। एक साधु बाबा, जो हमारे घर आये थे, ने सबसे पहले यह पहचाना कि मैंने सुनने की शक्ति खो दी। उन दिनों में, शहर जाना एक विलासिता था। जब तक मेरे पिता ने मुझे इलाज के लिए जमशेदपुर और अन्य शहर ले गए, तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

जब मैं मैट्रिक परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ, मेरे चाचा ने सुझाव दिया कि चूंकि मुझे नौकरी नहीं मिलेगी, इसलिए मुझे आगे की पढ़ाई नहीं करनी चाहिए और खेती-बाड़ी करना चाहिए। लेकिन मेरे अंदर एक आग था। मैं विज्ञान में समर्थ था और मैं डॉक्टर बनने की इच्छा रखता था। तो मैंने अपने मध्यवर्ती स्तर में जीवविज्ञान का चयन किया। मैं अपने सभी कक्षा में उपस्तिथ था, हालांकि मैंने शिक्षकों द्वारा बोली जाने वाली कुछ भी नहीं सुना, और केवल अपने साथी छात्रों से नोटों की प्रतिलिपि बनाई।

एक दिन, मेरे जीवविज्ञान के प्रोफेसर ने मुझसे पूछा कि मैं क्या बनना चाहता हूं, और मैंने गर्व से कहा "डॉक्टर" । उसने मुझे अजीब से देखा और कहा, "तुम सुन नहीं सकते, तुम डॉक्टर कैसे बन सकते हो? और अगर आप डॉक्टर बन गए हैं, तो आप रोगियों द्वारा व्यक्त किये गए समस्याओं को कैसे सुन पाओगे? " यह बात मुझे कठोर लगा, लेकिन यह पहला वास्तविक करियर मार्गदर्शन था जो मैंने प्राप्त किया। मैंने अर्थशास्त्र होनर्स (honours) करने का फैसला किया। इस बीच, किसी ने मुझे बताया कि चार्टर्ड एकाउंटेंट बहुत मांग में थे और वित्त में करियर के लिए ज्यादा सुनने की आवश्यकता नहीं थी। तो, मैंने सी.ए करने का फैसला किया। मेरे करियर के बारे में चिंतित, मेरे पिता ने अपने अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक को बताया कि मुझे सुनवाई की विकलांगता है। बोधनवाला सर जो बहुत दयालु व्यक्ति थे, ने मुझे एक कंपनी प्रशिक्षु के रूप में कंपनी में भर्ती करवाया। उन्होंने मेरी मुलाकात कंपनी के कंट्रोलर ऑफ फाइनेंस से करवाई, और उनसे मेरी देखभाल करने को कहा। वित्त नियंत्रक, सम्पत सर, ने मुझे मार्गदर्शन करने के लिए कंपनी में एक कार्यकारी से मिलवाया और मुझे सलाह दी गई कि चूंकि सी.ए के लिए सी.ए फर्म में तीन साल के व्यापक और दैनिक प्रशिक्षण की आवश्यकता है, इसलिए मैं नौकरी के साथ- साथ इसे करने में सक्षम नहीं हूँगा। उन्होंने सुझाव दिया कि मैं इसके बजाय आई.सी.डब्ल्यू.ए पर विचार कर सकता हूं। मैंने उनकी सलाह ली और पहले ही प्रयास में आई.सी. डब्ल्यू.ए इंटर में उत्तीर्ण हुआ।

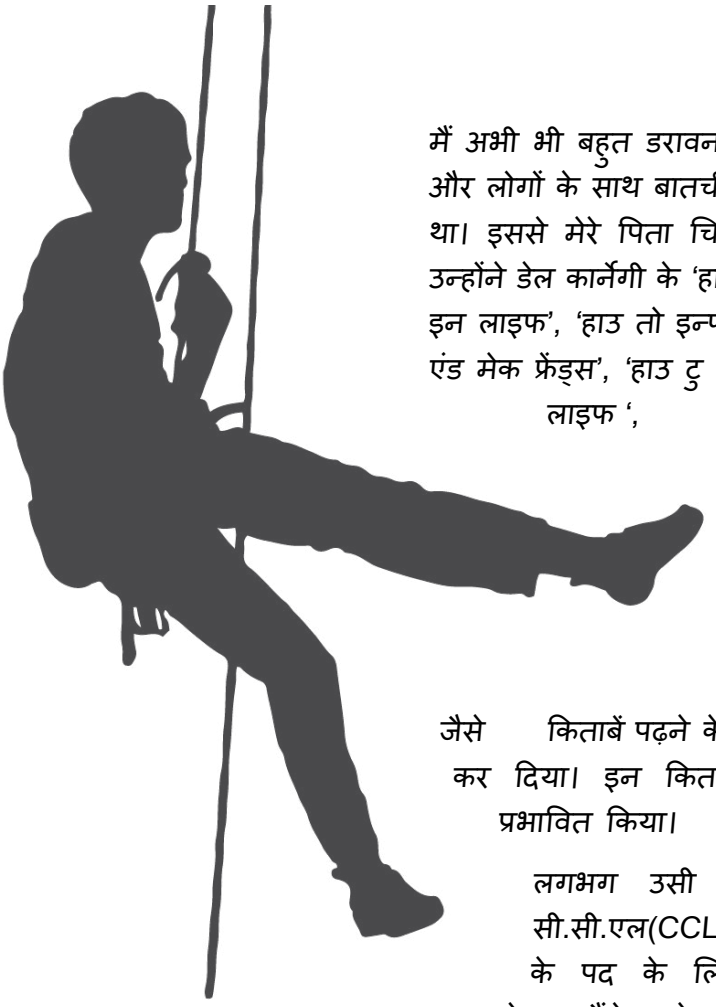

मैं अभी भी बहुत डरावना , अंतर्मुखी और लोगों के साथ बातचीत से परहेज था। इससे मेरे पिता चिंतित थे। तो उन्होंने डेल कार्नेगी के 'हाउ टु सक्सीड इन लाइफ', 'हाउ तो इन्फ्लुएंस पीपल एंड मेक फ्रेंड्स', 'हाउ टु लिव ऐ हैप्पी लाइफ ', 'कोआपरेट विथ द इनएविटेबल' जैसे किताबें पढ़ने के लिए खरीद कर दिया। इन किताबों ने मुझे प्रभावित किया।

लगभग उसी समय मैंने सी.सी.एल(CCL) में एकाउंटेंट के पद के लिए विज्ञापन देखा। मैंने आवेदन किया और शारीरिक रूप से विकलांग कोटा के तहत चुना गया और सी.एम.पी.डी. आई(CMPDI) में नौकरी की पेशकश की गई। यह मेरे जीवन में दूसरा मोड़ था। सी.एम.पी.डी.आई में पहले ही दिन सी.एम.पीडी.आई के उपाध्यक्ष और वित्त प्रबंधक, कृष्णन सर, ने मुझे अपने कमरे में बुलाया। उन्होंने मेरे नाम पूछा; लेकिन घबराहट के कारण मैं जवाब नहीं दे सका। मुझे लगता है कि वे मेरे मन की स्थिति को समझ गए और धीरे से मुझे बैठकर आराम करने के लिए कहा। इशारे में उन्होंने मेरे परिवार, गाँव इत्यादि के बारे में पूछा और पुछा कि श्रवण-शक्ति की हानि कैसे हुई। उसने मुझे चिंता न करने को कहा और सलाह दिया कि चूंकि मेरी सुनवाई की विकलांगता है, इसलिए मुझे कंप्यूटर परिचालन सीखना चाहिए। कृष्णन सर ने सी.एम.पी.डी.आई के कंप्यूटर विभाग के प्रमुख से अनुरोध किया कि वे मुझे अपने विभाग में प्रोग्रामिंग सीखने के लिए बिठाएं , और मैंने ऐसा ही किया। मुझे यह कहते हुए गर्व है कि 1990 में विकसित किए गए कई कंप्यूटर प्रोग्राम अभी भी सी.एम.पी.डी.आई में उपयोग में हैं।

महाप सिंह सर, सी.एम.पी.डी.आई के सी.एम.डी, एक और सज्जन हैं जिन्होंने मुझे प्रभावित और निर्देशित किया था । एक बार जब मैंने समाचार पत्रों में पढ़ा कि उन्हें कुछ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था, मैंने उन्हें बधाई देने के लिए एक पत्र लिखा। उन्होंने तुरंत जवाब में मुझे 'धन्यवाद' पत्र भेजा और अपने कार्यालय में भी बुलाया। जब उन्हें पता चला कि मैं बधिर था, तो उन्होंने कृष्णन सर से बात की और उनसे मुझे सभी संभावित समर्थन प्रदान करने के लिए कहा। इससे मैं बहुत प्रेरित हुआ।

एक और व्यक्ति जिनका मुझ पर बड़ा प्रभाव था वे एस.के गांगुली सर थे। उन्होंने न केवल मेरा मार्गदर्शन किया, बल्कि उन्होंने मुझे काम को सुधारने और बेहतर तरीके से करने की स्वतंत्रता भी दी। मैंने उनके तहत केंद्रीय और कॉर्पोरेट खातों की मूल बातें सीखीं। साथ मिलकर हमने विभाग-विशिष्ट लाभप्रदता, लागत आदि को खोजने के लिए खातों और विभागीय कोड एक नया सेट पेश किया ।

> मुझे आश्चर्य है कि एक बहुत शर्मीली, अंतर्दृष्टि लड़के से आज मैं बहिर्मुखी में कैसे बदल गया। मुझे प्रेरित करने और बदलने के लिए सी.एम.पी.डी.आई और मेरे सभी वरिष्ठ अधिकारीयों को धन्यवाद।

उनके मार्गदर्शन और समर्थन के तहत मैंने आर.ए.बी. एम.एन से डेटा निकालने का तरीका सीखा। मैंने सी.एम.पी.डी.आई के सभी सात आर.आई से तलपट डेटा निर्यात करने के लिए एक विधि विकसित की और इसे समेकित किया, जिसने कंपनी का काफी समय और प्रयास बचा।

सी.एम.पी.डी.आई में मुझे अपने सभी वरिष्ठ अधिकारियों से सराहना मिली और हमेशा समयोचित पदोन्नति भी दिया गया। मेरे जीवन का अगला मोड़ तब आया जब मेरे वरिष्ठ अधिकारी ए. के.सोनी सर ने सिंगरौली को मेरा स्थानांतरण आदेश जारी किया। सिंगरौली का स्थानान्तरण आदेश, सजा के रूप में माना जाता था। मैंने मेरी विकलांगता के आधार पर स्थानांतरण आदेश पर पुनर्विचार करने के लिए अनुरोध किया लेकिन इसमें असफल रहा।

मैं इस स्थिति को स्वीकार करने में असमर्थ था और उस रात भर रोया। फिर मैंने खुद से कहा, "मैं नरक में तो नहीं जा रहा हूँ। कई निदेशक, सी.एम.डी और वरिष्ठ पदों के व्यक्तियों को वहां तैनात किया गया है। मैं वहाँ से काम क्यों नहीं कर सकता? मुझ पर हमेशा कृपा बनाये रखने के लिए मैं भगवान का शुक्रगुज़र हूँ "। और मैंने सिंगरौली के लिए अपने बैग पैक किए।

सिंगरौली में, मेरी मुलाकात बहादुर सर, आर.डी से हुई । उन्होंने मुझे वो सभी समर्थन दिया जितना कोई भी चाहेगा। कुछ महीनों के भीतर, मुझे एच.ओ.डी फाइनेंस में पदोन्नत किया गया। मुझे जल्द ही जयंत, निगाही,अमलोहरी, दुधिचुआ जैसे सक्रिय कोयला क्षेत्रों में जाना पड़ा। मुझे कैंपिंग करने का भी अवसर मिला और मैंने सिंगरौली के जंगलों और नदियों की सुंदरता का आनंद लिया। मैंने वहां वित्तीय लेनदेन को व्यवस्थित और कम्प्यूटरीकृत करने की कोशिश की। मैंने सिंगरौली में कई अच्छे दोस्त बनाए और मेरे अधीनस्थों के दिल जीतने की कोशिश की। जब मैं सिंगरौली से स्थानांतरित हुआ, तब अपने अधीनस्थों की आंखों में आँसू देखकर मैं भी भावनात्मक हो गया । यह स्थानांतरण मेरे लिए

> "सबको मैं यही कहता हूं: सफलता का एकमात्र मंत्र है"अपने आप पर विश्वास करो। तब दुनिया आप पर विश्वास करेगी "। आकांक्षा करने के लिए साहस रखें, और कभी हार मत मानो।"

एक अप्रत्यक्ष आशीर्वाद था। इससे मुझे कुछ अद्भुत अनुभवों के अलावा बहुत सी शिक्षाएं मिलीं। सोनी सर को एक बड़ा धन्यवाद।

मुझे विश्वास है कि हर विकास के पीछे कुछ अच्छा है। हमें केवल इसका एहसास होना, अनुभव करना और सीखना है। आज, मैं सी.एम.पी.डी.आई में मुख्य प्रबंधक- वित्त, हूँ! मुझे लगभग 10 वर्षों तक सी.एम.पी.डीआ.ई के गोंडवाना क्लब के कोषाध्यक्ष और पांच साल तक सी.एम.पी.डी.आई कल्याण कोष के कोषाध्यक्ष होने का विशेषाधिकार मिला। मुझे शतरंज और अन्य प्रतियोगिताओं में भी भाग लेने का अवसर मिला।

मुझे आश्चर्य है कि एक बहुत शर्मीली, अंतर्दृष्टि लड़के से आज मैं बहिर्मुखी में कैसे बदल गया। आज, मेरे जीवन में हर खुशी है - एक महान करियर, एक घर, एक समझदार और सहायक पत्नी और दो अद्भुत बेटियां। किसी ऐसे व्यक्ति के लिए जिसने पूरी तरह से नकारात्मकता के माहौल में जीवन शुरू किया था और, एक समय पर, अपने जीवन को समाप्त करने पर भी विचार किया था, अब जो जीवन मैं जीता हूँ वह एक बहुत बड़ी और सुखद उपलब्धि है। मुझे प्रेरित करने और बदलने के लिए सी.एम.पी.डी.आई और मेरे सभी वरिष्ठ अधिकारीयों को धन्यवाद।

मानस दर्शन

मीरा बालाचंदर

क्या हमें अपने खुद के तस्वीरें खींचने और उन्हें अग्रेषित करने का इतना जुनून है कि वह हमें घटनाओं की मानसिक प्रभाव और मन में नक़्क़ाशी बनाने ,उन सुंदर क्षणों का स्वाद लेने और घटनाओं, स्थानों या परिस्थितियों को जीवनभर के लिए यादगार बनाने की उपेक्षा करने के लिए प्रेरित करता है? मीरा बालाचंदर गौर करती हैं।.

एक तीन वर्षीय ऑटिस्टिक, गैर-मौखिक बच्चा, बिना किसी जागरूकता की कि उसका अपहरण किया गया है, गंभीर अपराध को तोड़ने में मदद करता है। बस, वह उस कमरे की दीवारों में, जहाँ उसे कैद करके रखा गया है, चित्र बनता है। लेकिन उसके चित्र इतने अचूक है कि पुलिस जल्द ही अपराध को सुलझा देता है।

अजीब लगता है? बिलकुल नहीं। लेखक लक्ष्मी मोहन, जिन्होंने कई ऑटिस्टिक बच्चों को देखा है, ने इसी तरह के प्रतिभाशाली बच्चे के साथ अपने अनुभव से इस लघु उपन्यास को लिखा दरअसल, कुछ ऑटिस्टिक व्यक्तियों - जिसमे सबसे प्रसिद्द स्टीफन विल्टशायर हैं - मौखिक अभिव्यक्ति की कमी को अचूक दृश्य अवलोकन और इसकी कलात्मक प्रजनन से पूरा करते हैं। विल्टशायर को किसी भी शहर के लक्षणों को दर्शाने के लिए उस शहर के ऊपर से सिर्फ 15 मिनट की हेलीकॉप्टर यात्रा की आवश्यकता है।

ओह , ज़बर्दस्त ढंग से तस्वीरों से जुड़े दुनिया में यह सबसे दुर्लभ अपवाद हैं। हममें से बाकी के लिए, तस्वीरें पर्याप्त हैं।

कुछ दिन पहले मैं और मेरी बेटी पुराने फोटो एलबम देख रहे थे, जब हमें मेरे पुरानी तस्वीरें मिली - फ्रॉक में एक सात वर्षीय गोल-मटोल लड़की । मेरी बेटी ने पन्नों को पलटते हुए टिप्पणी की, “कितना पूर्वव्यापी!” निश्चित रूप से, समकालीन कपड़ों के व्यापक संपर्क के कारण वह फ्रॉक, उसे सम्मोहित नहीं करेगा। लेकिन उस काले और सफेद तस्वीर ने मुझे बहुत कुछ कहा। यह तस्वीर दिवाली पर ली गई थी, साल के एकमात्र समय जब मुझे तैयार किया गया नए पोशाक मिलते थे। मुझे नृत्य लड़कियों के एक पैनल और और जेब वाली एक गहरे हरे सूती फ्रॉक बहुत अच्छा लगा! जब मेरे पिता ने मेरे इच्छाओं के लिए मंजूरी दिया और मैंने बहुत प्यार से पेपर पैकेट घर ले आयी , तो घर में तूफान उठा। बिना आस्तीन का काले रंग का फ्रॉक? मेरी नानी ने सोचा नहीं था कि उनकी टिप्पणियां मेरी आंखों को आँसू से दबदबा करेंगी। शुक्र है कि मेरे प्रति उनके प्यार ने इस मुद्दे को सुलझाने में मदद किया।

जोय्तिर्मय घरें नवंबर की उस ठंडी हवा की रात, ट्रेन की गुनगुनाहट, प्रकाश और अंधेरे के खेल ने मेरे दिमाग में एक ऐसे स्थायी छवि बनाई कि मैं कभी भी उस समय में जा सकती हूँ और उसे पुनर्जीवित कर सकती हूँ जब जीवन सरल और ज्यादा भरपूर था। वैसे तो गवाह के रूप में मेरे पास उन क्षणों की तस्वीर भी नहीं है।

और अब हम डिजिटल युग में हैं, जहाँ सब कुछ एक क्लिक या उससे भी कम पर उपलब्ध है। क्या स्मरणशक्ति मृतक है? नहीं। जैसे की विज्ञापन दावा करते हैं, फोन कैमरे में स्मृति बहुत ज्यादा उपलब्ध हैं! वे फोन हो सकते हैं लेकिन वे हमारे सर्वोत्तम

> “क्या एक पल या घटना का फोटो खींचना , वर्तमान का कार्य है या भविष्य के लिए अतीत का भंडार?”

मनोदशा, रूप और पोशाक लाते हैं, ऐसा हम सोचते हैं, और आत्मकामी की तरह, हम क्लिक करते रहते हैं।

लेकिन, ये तस्वीरें पुराने एल्बम में जगह नहीं पाती हैं। वे एक ही स्थान पर नहीं रहते हैं। पलभर में दोस्तों और दुश्मनों तक पहुँच जाती हैं। वे वास्तव में खानाबदोश हैं। इतने सारे तस्वीर है और ये इतने दोहराए जाते हैं कि फोन की याददाश्त को अवरुद्ध करते हैं, या ऐसे शिकायत करते हुए हम हमारे दृष्टी

> जोत्तिर्मय घरें नवंबर की उस ठंडी हवा की रात, ट्रेन की गुनगुनाहट, प्रकाश और अंधेरे के खेल ने मेरे दिमाग में एक ऐसे स्थायी छवि बनाई कि मैं कभी भी उस समय में जा सकती हूँ और उसे पुनर्जीवित कर सकती हूँ जब जीवन सरल और ज्यादा भरपूर था। वैसे तो गवाह के रूप में मेरे पास उन क्षणों की तस्वीर भी नहीं है।

में आए तस्वीर के अगले ढेर को प्राप्तकर्ताओं की भूलभुलैया में अग्रेषित करते हैं। वे हमें सामाजिक पाशे में रखते हैं, यद्यपि हमने इसके प्रासंगिकता को पूरी तरह से समझा हो की नहीं । उदाहरण के लिए, एक समूह के साथ संग्रहालय के यात्रा पर, मैंने देखा कि प्रदर्शन और विवरण केवल उतना ही महत्वपूर्ण हैं जितना कैमरा फोन में उन्हें खींच सकते हैं। किसको आराम से उन्हें पढ़ने की जरूरत है? बस तस्वीर खींचो और उन्हें अग्रेषित करो। खींचो और अग्रेषित करो। और यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि दुनिया को पता चलें कि हम कहाँ गए हैं।

वह गहरा सवाल जो मुझे कुतरता है वह है समय की भूमिका - काल में - और हमारे जीवन में। क्या एक पल या घटना का फोटो खींचना , वर्तमान का कार्य है या भविष्य के लिए अतीत का भंडार? 'स्पीकिंग ट्री' का एक लेख कहता है, यदि भविष्य के मार्गदर्शन के लिए अतीत को याद रखना काफी है, तो क्या हमारे व्यक्तिगत एल्बमों को दिमाग और दिल में रखना पर्याप्त नहीं है चाहे केवल छाप या त्रुटिपूर्ण विवरण ही मागदर्शन का काम कर रहे हों? क्या मेरी नानी की विशालहृदयता ने मुझमें थोड़ा सा भी छाप छोड़ी नहीं है, जो अब तक मेरे कुछ निर्णयों को प्रभावित कर रही हैं? यह हमारा धर्म है कि हम अपने शॉट्स के माध्यम से दुनिया से जुड़ने की एक भी संभावना बर्बाद न करें, ऐसा लगता है कि यहां तक कि वह पेड़ भी बहुत कुछ बताता है। उन्हें सिर्फ एक शाखा को ट्विक करना है या कहना है 'शाखा पर लुप्तप्राय गौरैया को ढूंढो' और इसे वायरल बनाना है !

CavinKare

16 வகை
அனைத்தும் சிறந்த சுவை

உங்கள் உணவை மேலும் சிறப்பாக்க,
நாங்கள் ஆவக்காய், தொக்கு, எலுமிச்சம்,
பூண்டு, தக்காளி, இஞ்சி போன்ற 16
சிறந்த ஊறுகாய் வகைகள் தருகிறோம்.
அத்தனையும் ருசித்திடுங்கள்.

R.NO. 66062/96